International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(III), October - December, 2025, pp. 55-58

आर्थिक विकास में लघु उद्योगों की भूमिका

कैलाश चन्द्र मीना*

सहायक आचार्य, व्यावसायिक प्रशासन, स्व. राजेश पायलट राजकीय महाविद्यालय, बांदीकुई, दौसा, राजस्थान।

*Corresponding Author: kailashchandram681@gmail.com

Citation: मीना, कैलाश. (2025). आर्थिक विकास में लघु उद्योगों की भूमिका. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(III)), 55–58.

सार

भारत में अनेक प्रकार के लघु उपक्रम प्रचलित रहे हैं जो कुटीर उद्योगों, ग्रामीण उद्योगों, हाथकरघा उद्योगों, खादी ग्रामोद्योगों के नाम से भी जाने जाते थे। परम्परागत रूप में इन्हें ग्रामीण एवं लघु उद्योगों के नाम से जाना जाता रहा है। किन्तु जब से भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उपक्रम विकास अधिनियम, 2006 अर्थात सूलम उपक्रम विकास अधिनियम 2006 लागू हुआ है तब से लघु एवं मध्यम उद्योगों की सम्पूर्ण अवधारणा में अत्यधिक बदलाव हुआ है। दुनिया के कई देशों में आज भी लघु एवं मध्यम– आकार के उपक्रम की अवधारणा प्रचलित है। किन्तु भारत में 2 अक्टूबर 2006 के बाद से ही लघु एंव मध्यम उद्योगो की अवधारणा को छोड़कर सूक्ष्म लघु एवं मध्यम अवधारणा अर्थात सूलम उपक्रमों की अवधारणा को अपना लिया है। जिसके कारण लघु एवं मध्यम आकार के उपक्रमों के साथ सभी उद्योगों का समावेश हो गया है। सम्पूर्ण विश्व में लघु एवं मध्यम उद्योगों का आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत में भी लघु उद्योग आर्थिक विकास एवं रोजगार वृद्धि में सहयोग दे रहे हैं।

शब्दकोशः *आर्थिक विकास, रोजगार, राजस्व, लघुउद्योग, विनियोग, उपक्रम, सकल घरेलू उत्पाद, अर्थव्यवस्था सूलम उपक्रम।*

प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्व में लघु एवं मध्यम उपक्रमों का सदैव महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। विकसित देशों की विकास यात्रा का श्री गणेश लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास से ही हुआ है। जापान इस बात का उदाहरण है। वर्तमान में चीन अपने लघु उद्योगों के विकास के कारण आर्थिक विकास की दौड़ में सबसे आगे चल रहा है। भारत कोई अपवाद नहीं है। भारत का इतिहास इस बात का गवाह है कि सदियों पूर्व इसके कुटीर एवं लघु उद्योगों के कारण विश्व में गौरवपूर्ण स्थान बना चुका था। धीरे–धीरे वह गौरव थोड़ा फीका पड़ा। हमारे देश के शासकों एवं नियोजनकत्ताओं ने इसके महत्व को कभी नहीं आंका। जिसके फलस्वरूप इनके विकास एवं विस्तार करने के लिए सूलम उपक्रम विकास अधिनियम 2006 लागू किया गया तथा लघु उद्योगों की अवधारणा को अपनाया गया। जिससे भारत के आर्थिक विकास में लघु उपक्रमों की भूमिका बढ़ती जा रही है और स्थानीय लोगों को रोजगार की प्राप्ति में निरन्तरता वृद्धि होने से उनका आर्थिक स्थायित्त्व हो रहा है। आर्थिक विकास में लघु उद्योगों की भूमिका बढ़ने से अर्थव्यवस्था में मजबूती रहती है साथ ही सकल घरेलू उत्पाद संतुलित रहता है। जिसके कारण राष्ट्रीय आय में वृद्धि संभव होती है।

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

लघु उद्योगों की आवश्यकता/महत्त्व

देश के सभी उपक्रमों में लघु या सूलम उपक्रमों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। देश के सभी उपक्रमों की संख्या का लगभग 90 प्रतिशत भाग सूलम उपक्रमों के रूप में देखने को मिलता है। वृहद उपक्रम शहरी एवं कस्बों में पाये जाते है। लेकिन लघु उद्योग देश के कोने–कोने में पाये जाते हैं। ऐसे में इन उपक्रमों के सम्बंध में सुस्पष्ट नीति की सदेव आवश्यकता होती है क्योंकि यह देश के स्थानीय संसाधनों का सदुपयोग करने में, संतुलित आर्थिक विकास, आर्थिक एकाधिकार, दर नियंत्रण, भौगोलिक सन्तुलन, समन्वित उद्योगों विकास को प्रोत्साहन, आधुनिक तकनीकी विकास, उद्यमिता कौशल एवं प्रशिक्षण, विदेशी पूँजी निवेश प्रोत्साहन एवं आर्थिक स्थायित्व हेतु लघु उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है।

लघु उद्योगों की भूमिका के आयाम

लघु उद्योगों की भूमिका के अनेक आयाम है। लघु उद्योग देश मैं कई प्रकार से योगदान देते हैं। यह आयाम निम्न प्रकार हो है।–

- **घरेलू सकल उत्पाद** :– लघु उधोग देश के घरेलू सकल उत्पाद में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। वर्तमान में 30 प्रतिशत से अधिक योगान दे रहे है। साथ ही देश के विनिर्माण उत्पादन का लगभग 30 से 35 प्रतिशत और निर्मात का 4.5 प्रतिशत से अधिक हिस्सा भी इन्ही उधोगों का है, जो अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है।
- **निर्माणी उत्पादन** :– लघु उद्योग देश के औद्योगिक उत्पादन में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। देश के कुल निर्माणी उत्पादन के मूल्य के लगभग 45 प्रतिशत भाग का उत्पादन कर रहे हैं।
- **पूँजी निर्माण एवं निवेश** :– देश में लघुउद्योग पूँजी निर्माण एवं निवेश में वृद्धि कर रहे है। यह पंजीकृत एवं अपंजीकृत दोनों प्रकार के उद्योगों में स्थायी सभी एवं निवेश में बढ़ावा कर रहे है।
- **रोजगार सृजन** :–
  - कृषि के बाद से सबसे ज्यादा रोजगार पुन प्राप्त करते है, खासकर ग्रामीण और अर्थशहरी क्षेत्रों में।
  - कंमनिवेश पर अधिक लोगों को काम मिलता है, जिससे बेरोजगारी कम होती है।
- **आर्थिक विकास**
  - देश के कुल उत्पादन और सेवाओं में लगभग 50 प्रतिशत का योगदान करते हैं।
  - प्रति व्यक्ति आय और घरेलू सकल उत्पाद में वृद्धि करते है।
- **क्षेत्रीय संतुलन और ग्रामीण विकास**
  - बड़े शहरों से दूर उद्योगों का प्रसार करके क्षेत्रीय असंतुलन को कम करते हैं।
  - ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को कृषि पर निर्भरता कम करने का अवसर देते हैं।
- **वृहद उद्योगों को सहायता**
  - लघु उद्योग वृद्ध उद्योगों के लिए आवश्यक सहायक सामग्री और कलपूर्जा को बनाकर मदद करते हैं।
- **निर्यात संवर्धन**
  - निर्यात किये जाने वाले उत्पादों (जैसे–हस्तशिल्प, वस्त्र) का बड़ा हिस्सा लघु उद्योगों से आता है, जिससे विदेशी मुद्रा अर्जित होती है

- **उद्यमशीलता को बढ़ावा**
  - कम पूँजी और लचीनेपन के कारण नए उद्यमियों, खासकर महिलाओं को आगे आने का मौका मिलता है।
- **स्थानीय से साधनों का उपयोग**
  - स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल और संसाधनों का उपयोग करते हैं, जिससे बर्बादी कम होती है।
- **मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत**
  - मेक इन इंडिया पहल को बढ़ावा देते हैं और स्थानीय उत्पादों की माँग बढ़ाते हैं, जिससे आत्मनिर्भरता आती है। संक्षेप में यह कहां जा सकता है कि लघु उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास रूपी इंजन है, जो समावेशी संतुलित और मजबूत औद्योगिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

साहित्य समीक्षा

आर्थिक विकास में लब्धु उद्योगों की भूमिका पर साहित्य समीक्षा दर्शाती है कि रोजगार सृजन क्षेत्रीय संतुलन, आय वितरण और ग्रामीण विकास के मुख्य इंजन है, जो कम पूँजी में ज्यादा लोगों को काम देते हैं और देश के कुल औद्योगिक उत्पादन व निर्यात में बड़ा योगदान देते हैं, हालांकि इन्हें वित्त, विपणन, तकनीक और बुनियादी ढाँचे जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों से सम्बंधित सांखिकीय योगदान

आर्थिक विकास में लघु उद्योगों की भूमिका से संबंधित वर्तमान आँकड़े, वर्ष 2024–25 के अनुसार निम्नलिखित है :–

क्षेत्र	प्रतिशत
1. सकल घरेलू उत्पाद	30 प्रतिशत
2. रोजगार सृजन	भारत में वर्तमान समय में लगभग 28 करोड
3. निर्यात में हिस्सेदारी	वित्त वर्ष 2024–25 में (मई 2024 तक) निर्यात में इनकी हिस्सेदारी 45.79ः रही।
4. विनिर्माण	औद्योगिक मूल्य संवर्धन का लगभग 40% तथा विनिर्माण में 45%
5. विविध उत्पाद	लघु उद्योग 8,000 से अधिक विभिन्न प्रकार के उत्पादों का निर्माण करते हैं ये पारम्परिक हस्तशिल्प, उच्च तकनीक उत्पाद शामिल है।

परिकल्पना

- लघु उद्योगों को बढावा मिलने से आर्थिक विकास में सहयोग मिलेगा।
- आर्थिक विकास होगा तो रोजगार सृजन एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी।

लघु उद्योगों के विकास में प्रमुख चुनौतियों

लघु उद्योग किसी भी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं लेकिन फिर इन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है :–

- **वित्तीय संसाधनो की कमी** – लघु उद्योगो को वित्तीय संसाधनो सस्ते उपलब्ध नही होते उन्हें महँगा लोन लेना पड़ता है।

- **तकनीकी पिछडापन** – वर्तमान समय में लघु उद्योगों के पास तकनीके नहीं होने से उत्पाद प्रभावित होता है।
- **विपणन की समस्या** – ब्रॉडिंग एवं मार्केटिंग की कमी भी लघु उधोगों की एक बड़ी समस्या है।
- **कुशल श्रमिको का अभाव** – ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी रूप से कुशल श्रमिक उपलब्ध नहीं हो पाते हैं।
- **कोर नियम** – लघु उद्योगों की लाइसेंस नीति, जीएसटी, श्रमकानून व अन्य प्रक्रियाएँ जटिल होती है।
- **कच्चे माल की उपलब्धता** – लघु उद्योगों को उत्पादन के लिए समय पर कच्चा माल एवं आवश्यक संसाधन समय पर प्राप्त नही होने से उत्पादन लागते बढ जाती है।

सुझाव निष्कर्ष

लघु उद्योगों को आर्थिक विकास में सक्रिय भागीदारी बढ़ाने हेतु निम्नलिखित समाधन किए जाने चाहिएः–

- **सस्ती वित्तीय सहायता** : सरकार बैकिंग योजनाओं के माध्यम से कम से कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराया जाये।
- **तकनीकी उन्नयन** : सूलम कलस्टर के माध्यम से आधुनिक मशीनो व तकनीकों को लघु उद्योगों में बढाना चाहिए।
- **डिजीटल मार्केटिंग** : ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से लघु उद्योग उत्पादों को देश–विदेश में विक्रय कर सकते है।
- **कौशल विकास** : श्रमिको के लिए प्रशिक्षण केन्द्र खोले जायें।
- **प्रक्रियाओं का सरलीकरण** : लघु उद्योग नीतियों में लाइसेंस प्रक्रिया का सरलीकरण हो।
- **सहकारी मॉडल** : छोटे उधोग सामूहिक रूप से विपणन करे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान की अर्थव्यवस्था लक्ष्मीनारायण नाथुराम का संस्करण 2024–25
2. भारतीय अर्थ व्यवस्था अतिरिक्त विशेषांक प्रतियोगिता दर्पण।
3. ग्रामीण भारत में लघुव्यवसाय की भूमिका : ओपी गुप्ता
4. व्यवसाय अध्ययन : N.C.E.R.T
5. उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय प्रबंध : आर.एल. नौलखा R.B.D.
6. भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम : N.C.E.R.T small side Industry: Concept status and policy: by Veena Bhatnagar Gender Small side Industry and development policy - Marilyn Carr
7. योजना और कुरुक्षेत्र : भारत सरकार प्रकाशन नई दिल्ली
8. लघु उद्योगो के आर्थिक योगदान पर लेख : राकेश शर्मा, हिन्दी ग्रंन्थ अकादमी।

❑❑❑